ॐ

श्रीमद् भागवत-कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ

ऋषिकेश, स्वर्ग आश्रम, (उत्तराखण्ड)

॥ 2 अप्रेल से 8 अप्रेल 2018 ॥

आमंत्रण

परम कृपालु आनन्दकंद श्रीकृष्ण चन्द की अहेतुकी कृपा, पूज्य गुरूवर की अनुकम्पा, कुलदेवी रानी सती दादी एवं पूर्वजों के आशीर्वाद तथा जन्मजन्मांतर के पुण्योदय से तुलस्यान परिवार को 'श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञानयज्ञ' के आयोजन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। त्रितापहारिणी जान्हवी गंगा मैया के पावन तट पर नित्य स्नान, अवगाहन, पूजन, दर्शन के साथ पूज्य गुरूवर, ज्ञान भक्ति कर्म योग के साक्षात् मूर्तरूप आचार्य श्री स्वामी गोविन्द देवगिरि जी के श्री मुखारविन्द से अमृतमयी सर्वग्रंथोनिवारक श्रीमद् भागवत कथा श्रवण के दिव्य रसास्वादन का अपूर्व शुभ अवसर हमें प्राप्त होगा। इस पावन आयोजन में आप सादर आमंत्रित हैं।

स्वागतोत्सुक
रोहित-सन्तोष
अपूर्व-श्वेता

निवेदक
सुरेश कुमार तुलस्यान
आनन्द कुमार तुलस्यान
अरूण - मंजु तुलस्यान
ऋषि - रूपा तुलस्यान

श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ

समय : प्रात: 9.30 से 12 एवं दोपहर 3.30 से 6 बजे तक

• 2 अप्रेल 18, सोमवार	श्रीमद्भागवत महात्म्य, कथारंभ मुनिजिज्ञासा, श्री नारद व्यास संवाद
• 3 अप्रेल 18, मंगलवार	श्री शुक-परीक्षित चरित्र, मनु-कर्दम चरित्र, कपिलोपदेश
• 4 अप्रेल 18, बुधवार	सती चरित्र, ध्रुवाख्यान, भरतचरित्र, अजामिलोद्धार, नृसिंह अवतार
• 5 अप्रेल 18, गुरूवार	गजेंद्र मोक्ष, श्री वामन अवतार, श्रीरामचरित्र, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव
• 6 अप्रेल 18, शुक्रवार	नंदोत्सव, श्रीकृष्ण-बाललीला, कुमारलीला, श्री गोवर्धन पूजा
• 7 अप्रेल 18, शनिवार	रासलीला, कंस वध, श्री कृष्ण रूक्मिणी विवाह
• 8 अप्रेल 18, रविवार	द्वारिका लीला, सुदामा पूजन, भागवत धर्म, उद्धवोपदेश, कथासमाप्ति

श्रीमद् भागवत-कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ

जो समस्त अनिष्टों को हरने में समर्थ हैं, सबकी आस्थाओं का स्मरण करते हैं तथा एक मात्र सुख स्वरुप हैं, प्रार्थना करने पर सबको अपनी शक्ति देने वाले व शान्ति के एक मात्र प्रदाता हैं, स्मरण करने पर जो ब्रह्मपद देने वाले हैं तथा स्वरस अर्थात भगवतभावानुभूति देने वाले हैं, प्रेम के अधिष्ठाता हैं, जो शाश्वत हैं।मेघ के समान शरीर वाले, अच्युतपद, पीताम्बर धारी अतीव सुन्दर श्रीकृष्ण की काया, वचन और मन, बुद्धि से सतत् शरण लेता हूँ।

योगेश्वरम् सच्चिदानन्दम् वासुदेवम् ब्रजप्रियम्।
धर्म संस्थापकं वीरम्, कृष्णम् वन्दे जगद्गुरूम्।।

श्रीमद् भागवत् पुराण महात्म्य

श्रीमद् भागवत को महापुराण की संज्ञा दी गई है।

एक लाख श्लोक के पंचम वेद के रूप में सभी विद्याओं, ज्ञान, नीति, धर्म, कर्त्तव्य, आदर्शों, संस्कारों को समेटे महाभारत इतिहास ग्रंथ की रचना के बाद भी वेदव्यास जी का चित्त व्यग्र एवं अशान्त रहा। तब महर्षि नारद की परामर्श पर श्री कृष्ण की माधुर्य पूर्ण लीलाओं से युक्त श्रीमद् भागवत् महापुराण की रचना श्री वेदव्यास जी ने बदरीकाश्रम में की।

श्रीमद् भागवत् श्रीकृष्ण द्वारा गीता में दिये हुए आश्वासन् की कथा है। कलयुग में मनुष्य के लिए भागवत एक सिद्ध ग्रंथ है। इसको सुनने से पितरों को मुक्ति मिलती है। जब तक ईश्वर का अनुभव, ज्ञान न हो मुक्ति नहीं मिलती है। श्रीमद्–भागवत मन की शुद्धि और भगवान की शब्दमयी साक्षात मूर्ति है। अनेक ग्रंथों का सार है। जब जन्म जन्मान्तर के पुण्यों का उदय होता है तब श्रीमद् भागवत् पुराण कहने सुनने और पढ़ने का सौभाग्य मिलता है।

हमारे भीतर सत्य भरा है, उसको उजागर करने हेतु भागवत एक शाश्वत् दीप है, भागवत मन का भोजन है हम भक्तों का चरित्र सुनेंगे तो मन सन्तुष्ट होगा, पुष्ट होगा, तृप्त होगा। इसके श्रवणमात्र से परीक्षित की तरह मोक्ष प्राप्ति सुलभ हो जाती है।

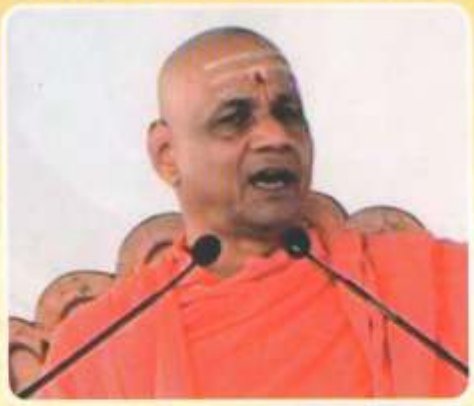

परमपूज्य स्वामी गोविन्द देव गिरि जी महाराज

पूज्य स्वामी जी श्री गोविन्द देव गिरि जी वेद, वेदाङ्ग, उपनिषद्, पुराण, महाभारत, रामायण आदि हिन्दू सनातन धर्म के वाङ्मय के प्रकांड विद्वान हैं। प्राच्य ज्ञान विज्ञान के साथ आधुनिक पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान, दर्शन के गंभीर अध्येता हैं। प्रखर चिंतक पूज्य स्वामी जी के प्रवचन बहुत ही विचारोत्तेजक तथा समाधानकारी होते हैं। श्री स्वामी जी विवेकानन्द, योगी अरविन्द, डॉ. राधाकृष्णन्, महात्मा गांधी की परम्परा में गीता-कर्मयोग-शास्त्र के प्रचार-प्रसार में अहर्निश लगे हैं। इस हेतु प्रस्थापित गीता परिवार के आप संस्थापक तथा मार्गदर्शक हैं।

पूज्य स्वामी जी के द्वारा संचालित संस्थाएँ

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान	पुणे	गीता परिवार	संगमनेर
श्री कृष्ण सेवानिधि	पुणे	संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल	पुणे
श्री गणेश समन्वय आश्रम	बीड़	श्री राधा वात्सल्यधाम	वृंदावन
संत श्री ज्ञानेश्वर कन्या वात्सल्यधाम	आलंदी	धर्मश्री प्रकाशन	पुणे
जनकल्याण कार्यालय	दिल्ली	लोकमंगल बाल संगोपन केन्द्र	पुणे
वेदश्री गौशाला	आलंदी		

पूज्य स्वामी जी का संदेश है कि ईश्वर की सच्ची पूजा अपने सत्कर्मों के विकसित सुगन्धित पुष्प से करना ही है

"धर्म हमारा अमर रहे"

राष्ट्र हमारा उन्नत होकर, अखिल विश्व कल्याण करे।

परमेश्वर की भक्ति सभी के अंतर में संचार करे।